Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 8 | August 2023

कुमाऊँ क्षेत्र में निर्मित कत्यूरी एवं चंद कालीन प्रमुख शैव मदिरों का ऐतिहासिक महत्व

Shikha Pandey[1], Dr. Hem Chandra Pandey[2]

[1] Assistent Professor, Gov P.G. College Bageshwar
[2] Assistent Professor, Gov P. G. College Pithoragarh

ABSTRACT

उत्तराखण्ड राज्य का गठन 9 नवंबर 2000 को हुआ। जो कि गढ़वाल और कुमाऊँ में विभक्त है। कुमाऊँ (N 29° 45' 21.6", E 79° 25' 36.426") क्षेत्र चीन और नेपाल की सीमाओं से लगा है। कुमाऊँ में शैव धर्मावलंबियों की मान्यता वैष्णव संम्प्रदाय से अधिक है, जिस कारण यहां शैव मंदिरों का निर्माण अधिक हुआ। मनुष्य द्वारा मदिर निर्माण कैसे और कब किया गया यह तो तिथिवार बताना संभव नहीं है। किंतु वर्तमान प्रौघोगिकी के द्वारा इनकी निर्माण तिथि का अंदाजा लगाया जा सकता है। मदिरों का निर्माण आज से लगभग 9 से 10 हजार वर्ष पूर्व का माना जा सकता है। रामायण में मंदिरों का उल्लेख मिलता है और रामायण का काल आज से लगभग 7000 से 7500 वर्ष का माना जाता है। वैदिक काल मुख्यतः चिंतन और मनन का काल माना जा सकता है। ऋषिगणों के द्वारा इस काल में वेदों उपनिषदों की रचना का कार्य किया गया जिस कारण मदिर निर्माण का कार्य नहीं हो पाया किंतु गुप्त काल आते–आते प्राचीन हिन्दु मंदिरों का जीर्णोद्धार और उनको भव्यता प्रदान की जाने लगी। वैदिक काल से ही शिव एक प्रमुख देवता के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। शिव की मूर्ति और लिंगो की जगह अब मंदिर निर्माण ने गति पकड़ ली। गुप्त काल के समय से शैव मंदिरों का निर्माण बढ़ा एवं इसी क्रम में कुमाऊँ में भी भव्य शैव मदिरों का पुनरूद्धार और नव निर्माण कार्य प्रारम्भ होने लगा।

KEYWORDS: Garwal, Shaiva, Vaishnva, Bagnath, Bajnath, Baleaswar, Jageshwar

INTRODUCTION
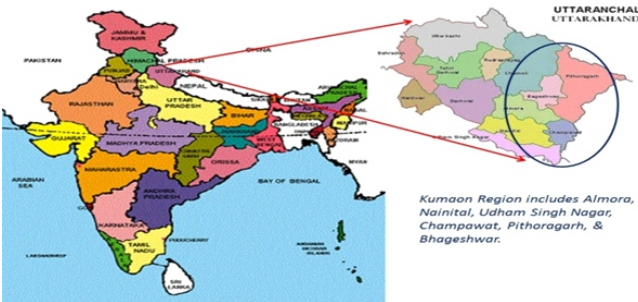
(कुमॉऊँ क्षेत्र मैप सौम्याज वर्ल्ड म्यार कुमॉऊँ)

कुमाऊँ क्षेत्र में भी गुप्तकाल के समय से ही मंदिर निर्माण देखने को मिलता है। क्योंकि कुमाऊँ में भगवान शिव की पूजा केवल शिव नाम से ना होकर उनके विभिन्न रूपों एवं नामों से भी स्थानीय स्तर पर होती है। जिस कारण कुमाऊँ में शैव सम्प्रदाय के मंदिरों की अधिकता पाई जाती है। कुमाऊँ में निर्मित ऐतिहासिक प्राचीन शैव मंदिरों का इतिहास निम्न प्रकार है।

बागनाथ मंदिर बागेश्वर

बागनाथ सरयू और गोमती के संगम पर स्थित भगवान शिव को समर्पित प्राचीन मंदिर है। मान्यता है कि भगवान शिव व्याघ्र रूप में यहां पर रहे थे जिस कारण इस मंदिर का नाम बागनाथ पड़ा और बागनाथ मंदिर के नाम से इस नगर को बागेश्वर कहा जाने लगा। भगवान शिव का यह मंदिर स्वयंभू माना जाता है यानी वे स्वयं प्रकट हुए।[1] शिव लिंग मंदिर के गर्भ ग्रह में स्थित है जो शिव और पार्वती का रूप माना जाता है। कत्यूरी शासक राजा भूदेव का अभिलेख बागनाथ मंदिर से प्राप्त होता है, जिसमें उसके आठ और शासकों के नाम खुदे हुऐ है। जोकि 9 वीं भाताब्दी के आस पास का शासक था। जिसमें सर्वप्रथम वसंतदेव नाम लिखा हुआ है। सबसे पहले यह शिलालेख जनरल ऑफ द एशियाटिक ऑफ बंगाल भाग एक में प्रकाशित हुआ था। मि0 ट्रेल द्वारा इस लेख की प्रतिलिपि ई. टी. एटकिंसन को उपलब्ध करायी गयी, उन्होंने इसका अंग्रेजी रुपान्तर हिमालियन गजेटियर खण्ड एक में प्रकाशित किया है। इस वंश के राजाओं द्वारा पूर्व से ही मंदिर के रखरखाव आदि के लिए भूमि दान में दी गयी थी। वर्तमान बागनाथ मंदिर का निर्माण चंद शासक लक्ष्मी चंद के द्वारा 1602 ई0 में करवाया गया है। राजा लक्ष्मीचंद का 1602 ई0 तथा 1603 ई0 का दाननामा है जिससे पता चलता है कि राजा ने बागेश्वर मंदिर के लिए आठ दाननामें किये थे।[2] माना जाता है कि मंदिर निर्माण के एक वर्ष तक राजा स्वयं यहां पर रहे। मदिर अपने तल से 50 फिट की ऊंचाई का है। जिसके शीर्ष शिखर पर पुष्प और चैत्य खिड़की पर अलंकरण किये गये हैं। मंदिर की भीतरी खम्बों पर कोई अलंकरण के निशान नहीं मिलते हैं। शिखर से मंदिर ढलानदार रूप में बना हुआ है व शीर्ष में लकड़ी का छत्र लगाया गया है।[3] और शेर की आकृति बनाई गयी है, व मंदिर के द्वार के सम्मुख नन्दी की मूर्तियाँ तथा लघु देवकुलिकाएं विद्यमान हैं।[4] कुमांऊ के इतिहास को जानने का बागनाथ मंदिर एक प्रामाणिक ऐतिहासिक स्त्रोत रहा है।

(व्याघ्रेश्वर बागनाथ में स्थित स्वयंभू शिव लिंग)

बैजनाथ मंदिर

बागेश्वर के गरूड़ तहसील में गोमती नदी के तट पर स्थित बैजनाथ मंदिर वैघनाथ चिकित्सकों के भगवान शिव को समर्पित है। यह सामूहिक देवताओं के रूप में निर्मित किया गया मंदिर है। यहां पर शिव, भगवान गणेश, माता पार्वती, कुबेर एवं सूर्य आदि भगवानों के मंदिरों का निर्माण किया गया है किंतु पूरे मंदिर समूह का मुख्य मंदिर भगवान शिव का है। मंदिर निर्माण 1150 ई0 में कत्यूरी शासकों के द्वारा कराया गया था। 7 वीं से 11 वीं सदी तक नरसिंह देव ने इस क्षेत्र पर राज्य किया था व बैजनाथ को अपनी राजधानी बनाया था। राजा भूदेव जो कि ललितसूर के बाद शासक बना इसने बैजनाथ मंदिर के निर्माण में सहयोग प्रदान किया था।[5] मुख्य मंदिर के मार्ग में पुजारी के घर के नीचे बामणी का मंदिर है व ऐसी मान्यता है कि इसी ब्राह्मणी के द्वारा शिव लिंग का निर्माण किया गया था। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार गोमती और गरूड़ गंगा के संगम पर ही भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह भी संपन्न हुआ था। बैजनाथ का पुराना नाम कार्तिकेयपुर था। कत्यूरी राजाओं की पुरानी राजधानी जोशीमठ थी। शक्ति के ह्रास तथा राज्य के छिन्न–भिन्न होने के कारण बैजनाथ नये कार्तिकेयपुर के नाम से एक शाखा की राजधानी बना। यहाँ नवीं दसवीं सदी की (प्रतिहारयुगीन) मूर्तियाँ पर्याप्त है, जिसकी पुष्टि तत्कालीन शैव चिह्नों (मुख लिंग तथा ऊर्ध्व लिंग) वाले लकुलीश सम्प्रदाय की प्रधानता से भी होती है। बैजनाथ की सर्वोत्तम मूर्ति भगवती मंदिर में द्वारपाल की तरह खड़ी करी गयी है। इसे तत्कालीन कला का उत्कृष्ट नमूना माना गया है।[6] कत्यूरियों के साथ जोशीमठ से जोगी, संन्यासी एवं शैव सम्प्रदाय के कई अनुयायी भी कत्यूर घाटी में आये उनके लिए राजा द्वारा मंदिर परिसर का निर्माण करवाया गया। जिस कारण 1202 ई0 के कई शिलालेख पाये गये हैं। बारह ज्योर्तिलिंगों में माने जाने के कारण इसकी धार्मिक महत्ता अत्यधिक मानी गयी है।

जागेश्वर मंदिर समूह

कुमाऊँ के अल्मोड़ा में स्थित शैव मंदिर है जो अल्मोड़ा नगरी से 36 कि0मी0 उत्तर पूर्व में देवदार के घने जंगल के बीच में जटागंगा नदी घाटी में 1870 मी0 की ऊंचाई पर स्थित है। जागेश्वर मंदिर स्थल की

उत्पत्ति कब और कैसे हुई इसकी कोई स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं है। किंतु शिव पुराण, लिंग पुराण और स्कन्द पुराण की पौराणिक कथाओं में जागेश्वर के शिव मंदिर का उल्लेख मिलता है। जिससे यह अंदाजा लगाया जाता है कि यह मंदिर लगभग 2500 साल पुराना है। जागेश्वर में 124 छोटे–छोटे मंदिरो का समूह है, जिसमें मुख्य शिव, विश्णु, देवी भाक्ति, सूर्य, नवग्रह मंदिर, कुबेर और भैरव बाबा आदि है।[7] इतने सारे भगवानों के मंदिर और मूर्तियों के कारण एक कहावत कुमाऊ मे प्रसिद्ध है कि–

देवता देखन जागेश्वर।
गंगा नानी बाघेश्वर।।

(जागेश्वर मंदिर समूह)

जागेश्वर मंदिर के बारे में कहा जाता है कि इसका निर्माण देव शिल्पी विश्वकर्मा के द्वारा किया गया है। विक्रमादित्य महान जागेश्वर मंदिर आया था और उसी के द्वारा यहाँ के मृत्युंजय मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया। एवं शालिवाहन ने जागेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था। शंकराचार्य द्वारा पुनः मंदिर को नया स्वरूप देकर यहा दक्षिण के जंगम पुजारी कुमार स्वामी को नियुक्त किया जो अपने साथ दक्षिण से एक भट्ट को लाया। भट्ट के द्वारा एक पहाड़ी लड़की से विवाह कर लिया गया और इनसे उत्पन्न संतानें बरोड़ कहलाई जो वर्तमान में जागेश्वर के पंडे हैं। इसके बाद कत्यूरी शासकों ने इस मंदिर का नवीकरण करवाया था। इस मंदिर में चंद राजाओं दीपचंद और त्रिमलचंद की मूर्तियां भी लगी हुई हैं।[8]

जागेश्वर नागर शैली में निर्मित त्रिरथ मंदिर है जो कि पश्चिमाभिमुख है। मंदिर की लंबाई 20 मीटर चौड़ाई 12 मीटर तथा ऊँचाई 11.83 मीटर है। मान्यता है कि यहां स्थिति झांकर सैम में भगवान शिव तपस्यारत रहते है और ऋषि वशिष्ठ की आश्रम की स्त्रियॉ उन्हें देखर आत्मविस्तृत हो गयी जिस कारण ऋषि ने भगवान शिव को श्राप दिया कि तुम्हारा यहाँ लिगपात हो जायेगा। जिस कारण यहाँ से शिव लिंग की पूजा का विधान शुरू हुआ माना जाता है।[9] 1745 ई0 में कल्याण चंद की मृत्यु के समय शिवदेव जोशी ने उसके अल्पवयस्क पुत्र दीपचंद का अभिलेख करा दिया। पिता के मदिर से लिए ऋण को चुकाने के लिए दीपचंद ने जागेश्वर को छहः गांव चढाये एवं 1748 ई0 से 1758 ई0 तक सात बार पृथक रूप से भूमिदान किया। दीपचंद की रानी पुत्रहीन रही और उसकी मृत्यु हो गयी जिस कारण दीपचंद ने स्वयं एवं रानी की मूर्ति अंकित करवाकर उसमें 'दीपचंद देव दिलीप मंजरी' खुदवाया। क्यूंकि चंद वंश में दूसरी पत्नी को मंजरी और तीसरी को खंजरी कहने की प्रथा थी।[10]

बालेश्वर मंदिर

बालेश्वर मंदिर चम्पावत नगर में स्थित है। जिसका ऐतिहासिक महत्व माना गया है। मंदिर लगभग 200 मी0 क्षेत्र में फैला हुआ है, साथ ही इस परिसर में दो और मंदिर स्थित है जो रत्नेश्रवर और चम्पावती देवी को समर्पित हैं। क्षेत्र में ऐसी मान्यता है कि चम्पावती कत्यूरियों की अंतिम संतान थी जिसका विवाह झूसी के राजा सोम चंद के साथ हो गया था। इसी चम्पावती के नाम से चम्पावत नगर का नाम पड़ा। एक अन्य मान्यता के अनुसार राजा अर्जुन देव ने अपनी पुत्री चम्पावती को यह नगर दान में दिया था। बालेश्वर चम्पावत क्षेत्र का प्रसिद्ध देवालय है। इसी नाम का देवालय गोलनासेरी (गुमदेश) क्षेत्र में भी है जहां पर नित्य खीर से भोग लगाने की प्रथा है किंतु बालेश्वर मंदिर में ऐसी कोई भेंट–पूजा नहीं होती है।[11]

चंद शासकों की राजधानी होने के कारण बालेश्वर मंदिर का महत्व और अधिक हो जाता है। क्योंकि समय–समय पर चंद शासकों द्वारा इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया गया। जिससे यह कलात्मक शिल्प का अनुपम उदाहरण हुआ। वर्तमान स्वरूप के आधार पर बालेश्वर मंदिर आठवी से नौवी सदी का निर्मित माना जाता है। चंद शासक देशट देव द्वारा मंदिर को भूमि प्रदान की गयी। चंद शासक उद्यान चंद ने राजा ज्ञानचंद के पापों के प्रायश्चित के लिए बालेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य करवाया जिसे राजा विक्रमचंद के द्वारा पूर्ण कराया गया। राजधानी होने के कारण अनेक चंद शासकों द्वारा समय–समय पर बालेश्वर मंदिर को भूमि प्रदान कि गयी।

बालेश्वर मंदिर (थल)

पिथौरागढ़ के थल में पूर्वी रामगंगा नदी के तट पर स्थित भगवान शिव को समर्पित देवालय है, जो कि अत्यधिक प्राचीन है। स्कन्द पुराण में अंकित है कि–

''बालीश्वरस्य देवस्य पार्श्वे तीर्थोत्तमं शुभम
निमज्य मानवस्तत्र माघस्नानफलं लभेत''

इस मंदिर का निर्माण 9 से 10 वीं सदी के आस–पास का माना जाता है। राजा उघोत चंद के द्वारा इस मंदिर का जीर्णोद्धार 1686 ई0 में करवाया गया।[12] किंतु इससे भी पूर्व में बालेश्वर मंदिर की स्थापना 7वीं सदी में कत्यूरी काल में बलतिर गांव के सेरे में हुई थी। आज भी वहां भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश की मूर्ति के साथ सतयुगी पीपल का पेड़ साक्षी हैं। माना जाता है कि इसके बाद नौवीं सदी में थल के पास त्रिरथ नागर शैली से शिव–पार्वती की सुंदर कलाकृति के इस मंदिर का निर्माण करवाया गया। मान्यता के अनुसार त्रेतायुग में बाली द्वारा कठोर तपकर भगवान शिव को प्रसन्न किया था और यहां पर बालीश्वरी मंदिर का निर्माण किया गया।[13]

कुमाऊँ में पूर्व काल से ही शिवोपासना के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। प्राचीन समय से ही शैव सम्प्रदाय का प्रमुख स्थान रहा है। जिस कारण कुमाऊँ में प्राचीन देवालयों का निर्माण किया गया। कत्यूरी एवं चंद कालीन शासकों के समय मंदिर निर्मित तो किये गये किंतु वर्तमान समय में इन देवालयों की स्थिति अत्यधिक अच्छी नहीं कही जा सकती है। चम्पावत और थल के शैव मंदिरो की स्थिति अत्यधिक गंभीर हो चुकी है, और इसके रखरखाव के लिए रक्षात्मक रूप से सख्त कदम उठाये जाने की आवश्यकता है। जिससे आगामी आने वाली पीढियां भी कुमांऊँ क्षेत्र की इस महान शैव परंम्परा और संस्कृति को जान सकें।

REFERENCES

1. पांडे, बद्री दत्त, कुमाऊं का इतिहास, श्याम प्रकाशन, अल्मोड़ा बुक डिपोः(1997), पृष्ठ संख्या 111।
2. एटकिंसन, एडविन .टी, थपलियाल प्रकाश, हिमालयन गजेटियर ग्रंथ दो भाग दो, उत्तराखण्ड प्रकाशन हिमालयन संचेतना संस्थानः 2020 पृष्ठ संख्या, 289।
3. नौटियाल, कांति प्रसाद, द आर्कियोलॉजी आफॅ कुमांऊ, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी 1969 पृष्ठ संख्या 100।
4. https://www.kafaltree.com/bagnath-mandir-bageshwar-uttarakhand/
5. दुम्का, चन्द्रशेखर, जोशी घनशयाम उत्तराखण्ड इतिहास और संस्कृति, प्रकाश बुक डिपो बरेली 1998 पृष्ठ संख्या 127।
6. सांस्कृतायन, महापंडित राहुलः कुमाऊँ, ज्ञान मण्डल लिमिटेड कबीरचौरा वाराणसी पृष्ठ संख्या, 336।
7. शुक्ला, स्कन्द, दैनिक जागरण, 26 जून, 2022 https://www.jagran.com/uttarakhand/nainital-famous-temple-almora-place-of-jageshwar-dham-where-lord-shiva-and-saptrishi-did-worship-22837820.htm
8. एटकिंसन, एडविन .टी, थपलियाल प्रकाश, 2020 पूर्वोक्त पृष्ठ संख्या 508।
9. निवेदिता, मध्य हिमालय का लोकधर्म, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी 2005 पृष्ठ संख्या 11।
10. निवेदिता, मध्य हिमालय का लोकधर्म 2005 पूर्वोक्त पृष्ठ संख्या 12।
11. शर्मा, डी0डी0, शर्मा, मनीशा, उत्तराखण्ड का सामाजिक एवं साम्प्रदायिक इतिहास, अंकित प्रकाशन हल्द्वानी 2015 पृष्ठ संख्या 390।
12. जगमोहन रौतेला का फोटो निबंधः थल का बालेश्वर मंदिर। https://www.kafaltree.com/baleshwar-temple-of-thal-pithoragarh/
13. शर्मा, डी0डी0, शर्मा, मनीशा 2015 पूर्वोक्त पृष्ठ संख्या 390।